रिकॉर्ड :– छोड़ भी दे आकाश सिंहासन..... ॐ पिताश्री 8/7/63

ओम् शांति। ओमशांति का अर्थ तो समझाए दिया है। तुम्हारा स्वधर्म है सायलेंस। उनका मतलब यह नहीं कि साइलेंस है; इसलिए और कुछ नहीं है। हर एक आत्मा में संस्कार हैं; परन्तु यह शरीर न होने कारण शांत रहते हैं। ऐसे नहीं, आत्मा सु(न्न) है। जैसे बाप नॉलेजफुल है वैसे आत्मा भी नॉलेजफुल है। हर एक आत्मा को जितना–2 यहाँ पुनर्जन्म लेना है, इतना उसका पार्ट है, वो आकर बजाते हैं। बाबा कहते हैं, मेरे में भी पार्ट भरा हुआ है। मैं जब आऊँगा तब तो आकर समझाऊँगा ना! जब दुनिया पतित बन जाती है, खास आदि सनातन देवी–देवता धर्म प्रायःलोप हो जाता है, तब मुझे आना है फिर से उ(स) धर्म की स्थापना करने अथवा फिर से सहज राज्य–योग सिखलाने; जो फिर प्रायःलोप भी होना ही है। अच्छा, मैं निराकार आऊँ तो आऊँ कैसे! कहते हैं, रूप बदल कर आओ। बरोबर निराकार से रूप बदल साकार में आते हैं ना! रूप बदल जाता है; कोई मेल, कोई फिमेल बन जाते हैं; जैसे एक्टर्स पार्ट बजाने भिन्न–2 रूप बदलते हैं ना! बाप भी कहते हैं कि सभी रूप बदलते हैं अर्थात् निराकार से साकार होते हैं। तो ज़रूर मुझे भी आना पड़े। मुझे रचना रचनी पड़े। आदि सनातन देवी–देवता धर्म की रचना होती ही है ब्रह्मा द्वारा। वो है प्रजापिता। ऊपर से तो नहीं आवेगा अथवा सूक्ष्म ब्रह्मा भी तो नहीं उतरेगा। वो तो है देवता। यहाँ तो ब्रह्मा मनुष्य चाहिए ना! बहुत बच्चे इस बात में मूँझते हैं, ठीक रीत समझा न सकते हैं। बाबा बार–2 समझाते रहते हैं। ब्रह्मा नहीं तो कहाँ से आवे! सूक्ष्मवतनवासी को प्रजापिता नहीं कह सकते, प्रजापिता तो यहाँ चाहिए। पहले–2 ब्रह्मा चाहिए जि(स)से ब्राह्मण रचे। तो मैं आकर इसमें प्रवेश करता हूँ; क्योंकि मुझे सहज राज्य–योग फिर से सिखाना है। तो ज़रूर रूप बदलना पड़े। और आत्माएँ तो गर्भ से जन्म लेती हैं। मैं गर्भ में नहीं जा सकता हूँ; इसलिए मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। इनको एडॉप्ट करता हूँ। यह है (हु)सैन का रथ। वो बहुत हसी(न) है ना! कहते हैं, हुसैन घोड़े पर आया। घोड़े पर तो बहुत चढ़ते हैं। इसका तो कोई भी अर्थ नहीं निकलता। हुसैन का जो रथ था, उसमें हसीन ने आकर प्रवेश किया। उसको नन्दीगण भी कहते हैं, भागीरथ भी कहते हैं। यह है उनका रथ, जिसका ब्रह्मा नाम रखा है। सभी के (नाम)

बाबा ने दिया था ना। इनको भी नाम दिया 'ब्रह्मा' और यह है 'सरस्वती', नहीं तो सरस्वती कहाँ से आए! सरस्वती है ब्रह्मा की बेटी। रचयिते हैं बाप। तो बाप समझाते हैं– इस शरीर का मैं लोन लेता हूँ। इनके शरीर में कब आता हूँ, जब इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म का भी अन्त का समय होता है। वानप्रस्थ अवस्था में आता हूँ। फिर इनका नाम ब्रह्मा रखता हूँ। वैसे ही औरों के भी नाम रखता हूँ। फिर बच्चों को बैठ यह सहज राज्य–योग सिखलाता हूँ। अब समझा ना! ब्रह्मा और सरस्वती की स्थापना कैसे करता हूँ? उनको एडॉप्ट करता हूँ। बाप और दादा दोनों चाहिए ना! इन्हों द्वारा तुमको अपना बनाता हूँ। बनाता मैं हूँ; परन्तु दलाल का रूपी (ध)र लेता हूँ। कहता भी हूँ– मनमनाभव– मेरे में बुद्धियोग लगाओ। यह शरीर बीच में दलाल हो गया। यह भी कहते हैं– बच्चे, उनको याद करो। जैसे ब्राह्मण लोग सगाई कराते हैं तो वो भी कहते हैं– पति से योग लगाओ। यह भी कहते हैं– उनसे लगाओ। खुद भी कहते हैं– मुझ प० से लगाओ। बाप से वर्सा मिलता है ना! वो वर्सा है अल्प काल के लिए। गुरु से भी अल्प काल के लिए वर्सा मिलता है। वो कोई बाप–टीचर तो नहीं है। स्टूडेंट को टीचर से वर्सा मिलता है। बैरिस्टर हमको बैरिस्टरी पढ़ाते हैं तो जैसे वर्सा देते हैं। गुरु भी अगर आप समान बनावे तो वर्सा कहें। बाकी फॉलोअर्स को वर्सा नहीं मिलता। जब तक उनका न बने, गेरु–कफनी न पहने, तब तक गद्दी लायक बन न सके। बाप कहते हैं– यहाँ तो कपड़े आदि बदलने की कोई बात नहीं। वो तो रजोप्रधान निवृत्तिमार्ग का सन्यास है। यह है प्रवृत्तिमार्ग। तुम जानते हो, यह दुनिया बहुत गंदी है, पाप ही पाप होते रहते हैं। सभी से बड़ा पाप यह है, जो मुझे सर्वव्यापी कह देते। इसको कहा जाता है– धर्म ग्लानि। कितने बेसमझ बन पड़े हैं! तुम जब समझाते हो तो समझते हैं, बरोबर सतयुग में ल०ना० का राज्य था, एक धर्म था। अभी तो कितने धर्म हैं! यह सभी कहाँ जाते हैं? मुक्तिधाम। ज़रूर वापिस ले जाने वाला गाइड चाहिए ना! मुक्ति–जीवनमुक्ति का पण्डा सिवाय रूहानी बाप के कोई होता नहीं। तुम बच्चे जानते हो, माया रावण ने शोक वाटिका में बिठाए दिया है। तुम्हारी अब क्या इज्ज़त रही है। भारत में जब ल०ना० का राज्य था तो देवताएँ कितनी इज्ज़तवान, कितने सुखी थे! फिर वो कहाँ गए? मनुष्य तो समझते हैं– निर्वाणधाम में चले गए; परन्तु नहीं, माया ने सभी की इज्जत ले ली है। पीछे वाममार्ग में गिरते हैं तो इज्ज़त गँमाए बैठते हैं। पवित्र रहने वालों की इज्जत है ना! अपवित्र बनने से बेइज्ज़त हो जाते तब तो इज्जत वालों आगे माथा टेकते हैं। (कन्या का मिसाल) इज्ज़त और बेइज्ज़त का कितना फर्क है! अब तुम जानते हो, हम सो देवता थे, बहुत सुखी थे, अभी अपवित्र बन पड़े हैं। बाप कहते हैं– मैं उन बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होता हूँ जो सागर के बच्चे काम–चिक्षा पर बैठ भस्म हो गए थे। अच्छा, फिर ज़रूर सागर को आना पड़े। तुम मेरे बच्चे थे; माया ने तुम्हारी इज्ज़त ली है, फिर मैं तुम्हारी इज्जत बनाने आया हूँ। तो इतना पुरुषार्थ करना चाहिए। भारत प्राचीन स्वर्ग था, अब नर्क बन पड़ा है। कितनी बेइज्जती है! और धर्म वाले कोई स्वर्गवासी नहीं बनते। उन्हों की इतनी इज्ज़त नहीं थी जितनी देवताओं की है। कितने समय से मंदिरों में पूजे जाते हैं! अब बाप है ज्ञान का सागर। वो काम–चिक्षा से उतार ज्ञान–चिक्षा पर बिठाए पावन बनाते हैं, जिस ज्ञान–चिक्षा, योग–चिक्षा से पाप भस्म होते हैं। भारत की कितनी बेइज्जती है! पूरे नर्कवासी, पतित बन पड़े हैं। ऐसा डर्टी, डेविल किसने बनाया? माया रावण ने। इसको कहा ही जाता है– डेविल वर्ल्ड। वो है डीटी वर्ल्ड। सो तो ज़रूर प० ही स्थापन करेंगे। अभी यह आसुरी मनुष्य सभी बंदर मिसल हैं। कितने अत्याचार होते रहते। भारत की क्या हालत है! यह लड़ाई भी खूनी नाहक है। कोई न कोई आफतें आवेंगी। नैचरल कैलेमिटीज़ आवेंगी। आनी ही चाहिए। भंभोर को आग लगनी चाहिए, तब तो सभी आत्माएँ वापिस जाय और सभी के शरीर खतम हो जाय। होलिका त्योहार भी गाया जाता है ना। यह विनाश ही कल्याणकारी है। आत्माएँ शुद्ध हो जाती हैं निर्वाणधाम। फिर यह पुराने शरीर खतम हो जाते। संगमयुग पर सभी आत्माओं को वापिस जाना है।

फिर नम्बरवार अपना–2 पार्ट बजाने आते रहेंगे। बाप आ(ए) ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों की मनुष्य सृष्टि रचते हैं। ब्राह्मणों को मनुष्य कहेंगे, देवता नहीं। अभी तुम ब्रह्मा का संतान ब्राह्मण बने हो। जगदम्बा, जगत पिता, आदम, बीबी कहते हैं, तो बच्चे चाहिए ना! यह है इनकी मुखवंशावली, बाकी सब हैं कुखवंशावली। जगदम्बा सरस्वती भी चाहिए, जिस पर कलश धरा जाता। वो भी मुखवंशावली है। वो लोग तो विद्युत मंडली से सरस्वती का टाइटल आर्टीफिशल ले आते हैं। ठगी तो बहुत है ना! अपन को शिवोहम् कहते, यह भी ठगी हुई ना! सरस्वती टाइटल रखाते हैं, यह भी ठगी है। यह सरस्वती तो ज्ञान देती है सद्गति के लिए। वो तो शास्त्र पढ़ अपनी कमाई करने लग पड़ते। वो हैं भक्तिमार्ग के लिए। जो होकर गए हैं उनके पुस्तक बनाए बैठ सुनाते हैं। उसका फिर (न)ाम रखते हैं– शास्त्र। वास्तव में इन सभी को धर्म शास्त्र भी नहीं कहेंगे। धर्म शास्त्र मु(ख्य) हैं 4। जो–2 धर्म स्थापन करते हैं, उसके लिए कहा जाता है– फलाणे धर्म का शास्त्र। अपना शास्त्र तो है ही एक गीता। वो है सूर्यवंशी–चंद्रवंशी का शास्त्र। वहाँ तो कोई शास्त्र है नहीं। ऐसे नहीं, वहाँ शास्त्र बनते हैं। शास्त्र हैं ही भक्तिमार्ग के लिए। सतयुग में न चित्र हैं, न शास्त्र हैं। यह शुरू ही होते हैं द्वापर से। पीछे गीता आदि धुके(तुक्के) से बैठ बनाए हैं। आदि सनातन देवी–देवता धर्म का शास्त्र यह एक है। अब तुम जानते हो, यहाँ हमको भगवान पढ़ाए रहे हैं। कृष्ण के बहुत जन्मों की अंत के जन्म की सोल को भी पढ़ा रहे हैं। कृष्ण अब पढ़ रहे हैं। उन्होंने फिर कृष्ण को पढ़ाने वाला कर दिया है। यह भी होना ही है। अब परमपिता प० ब्रह्मा के मुख द्वारा सभी वेदों–शास्त्रों का सार बैठ बतलाते हैं। कृष्ण के तन द्वारा नहीं। ब्रह्मा द्वारा कौन सुनावेगा? क्या विष्णु, शंकर सुनावेंगे? नहीं। बाप कहते हैं– मैं इस ब्रह्मा तन द्वारा आकर सुनाता हूँ। बुद्ध–क्राइस्ट आदि ने धर्म स्थापन किया, फिर पीछे उनके शास्त्र बने हैं। उन्होंने भी पवित्रता की शिक्षा दी। यहाँ भी पवित्रता की बात है। इस पर ही विघ्न पड़ते हैं। सभी पतित हैं तब तो पुकारते हैं– पतित–(प)ावन आओ। यहाँ नर्क में सभी दुखी हैं। फिर हिस्ट्री रिपीट तो करनी है ना! सतयुग फिर आना है ज़रूर। ड्रामा का चक्कर फिरना है। दुनिया इस कल्प के राज़ को नहीं जानती; इसलिए सभी घोर अंधियारे में हैं, ब्रह्मा की रात है। ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश। फिर इन्जेक्शन लगाते हैं आत्मा को। आत्मा से ही बाबा बात करते हैं। तुम्हारा चक्कर पूरा हुआ। अभी यह पाँचवा वर्ण चल रहा है। फिर पुनर्जन्म ज़रूर लेते ... आना है। तुम्हारे लिए यह कोई नई बात नहीं। बापदादा, माँ संग तुमने अनेक बार पार्ट बजाया है, बजाते ही रहेंगे। तुम जानते हो, हम भारत को स्वर्ग बनावेंगे। जो पुरुषार्थ कर पढ़ेंगे वो ही पद पावेंगे, सभी तो नहीं आवेंगे। यह अच्छी रीत समझाना है। भारत इस समय बेइज्ज़त है, कंगाल बन पड़ा है। सभी को भारत पर तरस पड़ता है। बड़े आदमियों को गरीबों पर तरस पड़ता है ना! बाप भी कहते हैं, मैं गरीब निवाज़ हूँ। हमारा भी पार्ट है। ज्ञान सागर के बच्चे जो भस्म हो गए हैं काम चिक्षा पर बैठ, उनको फिर जीवनमुक्त बनाता हूँ। वो भी सावरन बनाता हूँ। जीवनबंध वाले सावरन, जीवनमुक्त सावरन को सिर झुकाते हैं। फिर ड्रामा अनुसार तुम जीवनमुक्त में आवेंगे। अभी तुम सभी का पार्ट जानते हो। वण्डर है ना! यह बातें बड़ी सूक्ष्म हैं। एक आत्मा क्या है, चमकती है भृकुटि के बीच। तारे मिसल है ना! जैसे तारे ऊपर में है ना! तारे तो बहुत बड़े हैं, दूर से छोटे दिखाई पड़ते हैं। आत्मा तो बड़ी नहीं है। कितनी छोटी आत्मा है। उनमें कितना पार्ट भरा हुआ है। वण्डर है ना! कहते हैं, मैं भी इसमें प्रवेश करता हूँ। मेरा भी कितना पार्ट है। मैं आत्मा हूँ तो ज़रूर ना। परम आत्मा अर्थात् परमधाम में रहने वाली परम आत्मा। इसको कहते हैं प०। वो है सुप्रीम सोल। ऊँच ते ऊँच वो आए ज्ञान देते हैं। उनको ही पतितों को पावन बनाना है। अभी तुम सारी सृष्टि की आदि–मध्य–अंत का जान गए हो। ॐ